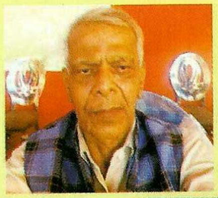

कृतिकार
डॉ. अजय प्रसून
को प्राप्त
सम्मानोपाधियाँ

कृतिकार
डॉ. अजय प्रसून
अपने
पूरे परिवार के साथ

₹ 100.00

सावी पब्लिकेशन
SAWI
एलजीएफ-6, बंशीधर काम्पलेक्स, डालीगंज
लखनऊ-226020 (उ.प्र.) मो.: 9335221278
e-mail : sawipublication@gmail.com

9788196027643

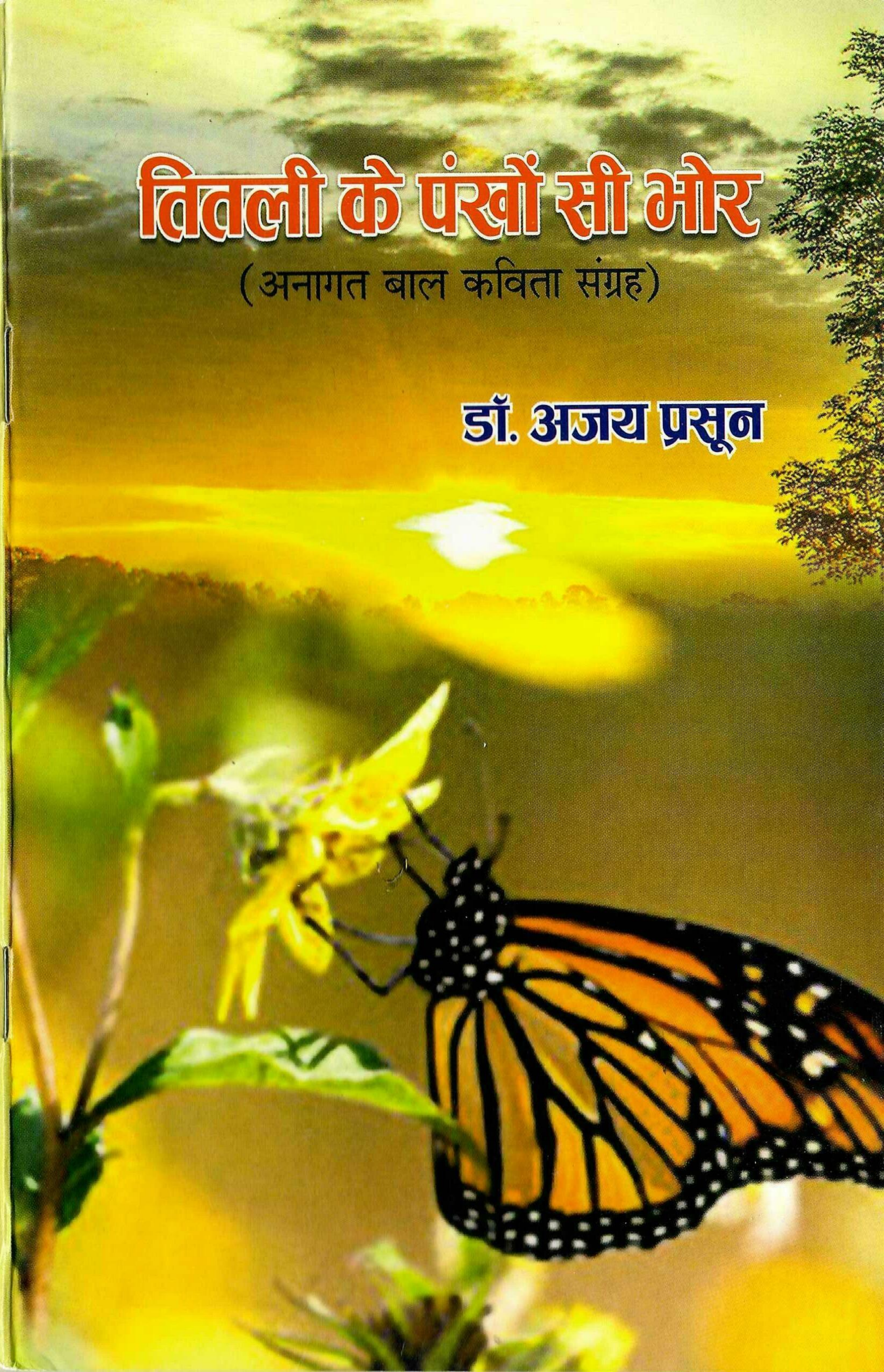

तितली के पंखों सी भोर

(अनागत बाल कविता संग्रह)

डॉ. अजय प्रसून

तितली के पंखों सी भोर

(अनागत बाल कविता संग्रह)

डॉ. अजय प्रसून

सावी पब्लिकेशन
डालीगंज, लखनऊ

ISBN	978-81-960276-4-3
कृति	**तितली के पंखों सी भोर** **(अनागत बाल कविता संग्रह)**
कृतिकार	**डॉ. अजय प्रसून** अध्यक्ष/संस्थापक, अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान, माँ वैभवलक्ष्मी होम्यो क्लीनिक, 538/II/318, योगीनगर, त्रिवेणी नगर तृतीय, सीतापुर रोड, लखनऊ-226020 मो.: 9305107455
प्रथम संस्करण	2023
© स्वत्वाधिकार	कृतिकार
मूल्य	रु. 100/-
प्रकाशक	**सावी पब्लिकेशन** एल.जी.एफ.-6, बंशीधर काम्पलेक्स, डालीगंज, लखनऊ-226020 (उ.प्र.) मो.: 9335221278
	सभी चित्र गूगल से साभार
शब्द-संयोजन	सदाशिव तिवारी
मुद्रक	विवेक प्रिन्टर्स, निकट डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ-226020 मो.: 9839746476

"TITLI KE PANKHON SI BHOR" (Anagat Bal Kavita Sangrah)
by- **Dr. Ajay Prasoon**

समर्पण

अपनी सहधर्मिणी श्रीमती ममता प्रसून
को
जिनकी गोद में हमारे बच्चे
और फिर उनके बच्चे
हँसते-खेलते और गाते-गुनगुनाते
हुए बड़े हुए।

- डॉ. अजय प्रसून

अनुक्रम

●	भूमिका	5
●	अपनी बात	7
1.	सर्दी है खरगोश के जैसी	9
2.	बादल	10
3.	नादान न बनना	11
4.	अखबारों में छपे दोपहर	12
5.	सिंधु है	13
6.	मन को भाता मरुथल	14
7.	मान सरोवर	15
8.	पर्वत समान	16
9.	भारत माँ	17
10.	जाड़ा आया	18
11.	मछलियाँ एक जगह रहतीं	19
12.	एक नाना थे	20
13.	धरा पल्लवित पुष्पित होगी	21
14.	चक्करदार नदी	22
15.	पार्क में बाल गोपाल	23
16.	तितली के पंखों सी भोर	24
17.	टूटी खोली	25
18.	एक टांग पर खड़ा बगूला	26
19.	सीप शंख से जुड़ते नाते	27
20.	आसमान से बड़े पहाड़	28
21.	बात बच्चों की निराली	29
22.	तिरंगा गंगा सा पावन	30
23.	बादल जल से भरे	31
24.	पाठशाला	32

भूमिका

बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी भाई डॉ. अजय प्रसून जी को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। वे अनागत आन्दोलन के संस्थापक-प्रवर्तक, सफल गीतकार-ग़ज़लकार-दोहाकार एवं वरिष्ठ बाल साहित्यकार के रूप में जाने-माने और पहचाने जाते हैं। वर्ष 1980 के आसपास से मेरा उनसे आत्मीय संपर्क रहा है। कई साहित्यिक यात्राओं में मैं उनके साथ रहा हूँ। एक अरसे तक उनके सुसंपादन में काव्य केन्द्रित पत्रिका 'ताम्रपर्णी' का प्रकाशन होता रहा। उन दिनों इनके द्वारा लिखे गये गीत आकाशवाणी लखनऊ से संगीतबद्ध रूप में प्रसारित होते रहते थे।

बाल काव्य में भी इनकी रुचि आरम्भ से ही रही है। अब तक इनके कई बाल काव्य संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत बाल काव्य संकलन में उनकी विविधवर्णी बाल कविताएँ संकलित हैं। आज के बच्चों की रुचियों, अपेक्षाओं के अनुरूप बाल परिवेश से सम्बद्ध बाल कविताएँ यहाँ दी गई हैं जो बाल मनोविज्ञान की कसौटी पर भी खरी उतरने वाली हैं।

'तितली के पंखों सी भोर' नामक शीर्षक से प्रकाशित प्रस्तुत बाल काव्यकृति की जाड़े से सम्बन्धित एक बाल कविता की निम्न पंक्तियाँ तो सचमुच उद्धरणीय बन पड़ी हैं-

पत्तियाँ ठिठुर कर काँप रहीं
सारी दुनिया अलसाई है।
लगता फिर सर्दी आई है।।

डॉ. अजय प्रसून जी का एक उद्बोधन गीत बच्चों को कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देने वाला है। यथा-

कठिन शिखर है सामने चढ़े चलो।
ओ बालको! बढ़े चलो बढ़े चलो।।

भाई अजय प्रसून जी बाल ग़ज़लें लिखने में भी सिद्धहस्त हैं। उनकी प्रस्तुत बाल काव्यकृति का शीर्षक भी एक बाल ग़ज़ल पर आधारित है, जिसकी आरम्भिक दो पंक्तियाँ निम्नवत् हैं-

तितली के पंखों सी भोर।
सागर के शंखों सी भोर।।

यहाँ इनकी नदी विषयक बाल ग़ज़ल से दो पंक्तियाँ उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। देखें-

टेढ़ी चक्करदार नदी है।
मीठे जल की धार नदी है।।

इनकी एक बाल ग़ज़ल भी बड़े कमाल की बन पड़ी है जिसे मैंने हिन्दी ग़ज़ल विषयक अपने शोध ग्रन्थ में उद्धृत किया है। बाल परिवेश से सम्बन्धित इस ग़ज़ल को बच्चे सरलता से गाते-गुनगुनाते हुए कंठस्थ कर सकेंगे। उदाहरणार्थ दो-तीन शेर प्रस्तुत हैं-

पाठशाला में छत की जगह टीन है।
इसकी हालत बड़ी यार संगीन है।
पानी बरसे टपाटप तो ऐसा लगे,
खोपड़ी पर बजे तक धिना धीन है।
एक छोटा सा घर प्रभु भिखारी को दो,
सर छिपाए कहाँ सोच में दीन है।

समस्त रचनाएँ एक से बढ़कर एक सुन्दर, सरल-सरस प्रवाहपूर्ण बालोपयागी तथा मनोरंजक हैं। इतनी उत्कृष्ट बाल रचनाओं के सृजन एवं प्रकाशन के लिए मैं भाई अजय प्रसून जी का हार्दिक वन्दन-अभिनन्दन करते हुए आश्वस्त हूँ कि बच्चे इन्हें तितली के पंखों पर बैठकर गाते-गुनगुनाते हुए कल्पनाकाश में उड़कर नई भोर का आनंद लेंगे और उगते हुए सूर्य को प्रणाम करेंगे। मुझे विश्वास है कि बड़े-बुजुर्ग भी इन रचनाओं को पढ़कर अपने बचपन को पुनः दोहरा सकेंगे। पाठ्य पुस्तकों में संकलित करने हेतु भी यह रचनाएँ निश्चय ही उपयोगी हैं।

प्रस्तुत बालकाव्य के प्रकाशन-पर्व पर मैं भाई अजय प्रसून जी के सुखी, स्वस्थ एवं शतायु होने की कामना करता हूँ। सस्नेह!

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
'ऐकान्तिका', 802, आलू थोक उत्तरी
बावन चुंगी, हरदोई-241001 (उ.प्र.)
मो.: 7607983984

अपनी बात

मेरा नवीनतम बाल कविता संग्रह 'तितली के पंखों सी भोर' आपके सम्मुख अवलोकन हेतु प्रस्तुत है। यह बाल कवितायें समय-समय पर विभिन्न मनःस्थितियों में बच्चों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। बच्चे हमारे आगामी भविष्य के लिये एक सुखद सोपान की तरह हैं जो हमें हमारे लक्ष्य तक पहुँचाने का एक सबल संबल हैं। आज के संदर्भ में हम देखें तो पहले की अपेक्षा उत्कृष्ट बाल साहित्य हमारे समक्ष आ रहा है जोकि समस्त बाल जगत को एक नवीन दृष्टि देने में सक्षम है।

मेरे बालसाहित्य लेखन को लगभग पचास वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, इस अंतराल में मेरे द्वारा यथासंभव बाल साहित्य विशेषकर बाल कविताओं का सृजन किया गया है। मेरा सदैव यही प्रयास रहा है कि बच्चों के लिये जो सृजित किया जाये, वह अत्यंत सहज और ग्राह्य रूप में हो। इस बालकविता संग्रह में भी मेरा यही प्रयास रहा है। इस संदर्भ में मैं यह नहीं कह सकता कि यह कवितायें बच्चों के मन को कितना और किस रूप में स्पर्श करेंगी, इसका निर्णय तो आप सभी सुधी पाठकगण ही करेंगे।

मेरी बाल कवितायें प्रचुर मात्रा में देश की विभिन्न बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें नंदन, मेला, बाल साहित्य समीक्षा, नवजीवन, स्वतंत्र भारत सुमन, स्वतंत्र भारत उपहार, बाल कविता, बाल दर्शन, बाल भारती, कच्ची धूप, यू.एस.एम., नया प्रभात, बाल गीतांजलि, बाल किरण, लोटपोट, दिल्ली मासिक, पराग यशकमल, शब्दलता, आज, नया प्रभात, संगीत पत्रिका, दृष्टिकोण आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

आकाशवाणी लखनऊ के बच्चों के कार्यक्रम में मैंने अनेकानेक वर्षों तक अपनी बाल कविताओं का पाठ किया है। उ.प्र. हिंदी संस्थान द्वारा 1981 में मेरी बालकृति 'गाओ गीत सुनाओ' गीत पर

अनुशंसा पुरस्कार प्राप्त हुआ था। वर्ष 2022 में मुझे बाल कविता सम्बन्धी 'सोहनलाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान' प्रदान किया गया है। मैं इस बात से संतुष्ट हूँ कि इस संदर्भ में मेरे द्वारा जितना कार्य किया गया है, वह पूरी तरह से समर्पित भाव से सम्पन्न हुआ है। निकट भविष्य में भी मेरा यही उद्देश्य रहेगा कि मैं यथासंभव बाल साहित्य के लिये समर्पित होकर लेखन करता रहूँ। कविता लेखन के प्रारंभिक दिनों में लेखन के साथ ही मेरे मन-मस्तिष्क में अनागत कविता आंदोलन का भाव भी प्रस्फुटित हुआ था, अतः मेरे द्वारा अनागत कविता आंदोलन की प्रस्तावना समाज साहित्य के सम्मुख प्रस्तुत की गई थी जिसके मूल में कठिन वर्तमान जीते हुए स्वर्णिम भविष्य की कल्पना का भाव निहित था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मैंने इस बालकृति को अनागत बाल कविता संग्रह का नाम दिया है।

इस अनागत बालकृति 'तितली के पंखों सी भोर' के संबंध में आपके उदार सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

जय माँ सरस्वती।

डॉ. अजय प्रसून
अध्यक्ष/संस्थापक
अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान
माँ वैभवलक्ष्मी होम्यो क्लीनिक,
538/II/318, योगीनगर, त्रिवेणी नगर-III
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020

होलिकोत्सव,
दिनांक 08.03.2022
मो. : 9305107455

सर्दी है खरगोश के जैसी

सर्दी है खरगोश के जैसी।
उड़े-उड़े से होश के जैसी।

पत्ती-पत्ती पर बिखरी है,
सुबह-सुबह की ओस के जैसी।

सारी देह कँपकँपा देती,
डिगे हुए संतोष के जैसी।

कोहरे में कुछ नहीं सूझता,
नरम पड़े से जोश के जैसी।

बढ़ा रही है ठंड मुश्किलें,
टूट रहे आक्रोश के जैसी।

आँख दिखाती है हम सबको,
गुस्साये पड़ोस के जैसी।

आती है 'प्रसून' ठंडक भी,
लुटे-लुटे से कोष के जैसी।

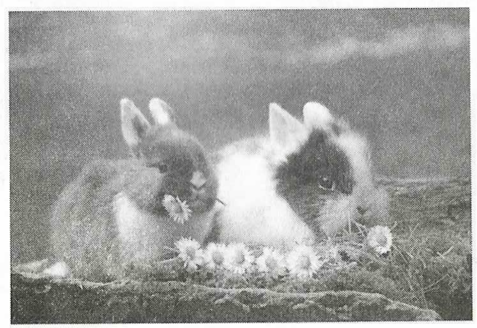

बादल

देखो ये जल वाले बादल।
जामुन जैसे काले बादल।

हर-हर गंगे बोल रहे हैं,
शिव के बने शिवाले बादल।

इन्द्रधनुष के रंगों वाले,
बाँटें नये दुशाले बादल।

आठ महीने बाद खुले ये,
जंग लगे हैं ताले बादल।

अहित किसी का कभी न करते,
अपने देखे-भाले बादल।

जी भर मन की प्यास बुझा लो,
बरसाती हैं नाले बादल।

तरह-तरह की शक्ल बनाते,
होते बड़े निराले बादल।

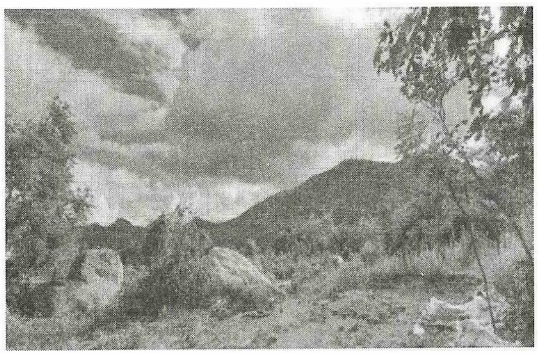

सबको गले लगाओ बच्चों

अभिमानी इंसान न बनना।
साधु बनो शैतान न बनना।

ईश्वर की पूजा तो करना,
स्वयं कभी भगवान न बनना।

सबको गले लगाओ बच्चों,
तुम नफरत की खान न बनना।

जग तुमको नादान समझ ले,
इतने भी नादान न बनना।

नदी बनो जल वाली कोई,
सूखा रेगिस्तान न बनना।

सबको सही मार्ग दिखलाना,
आँधी और तूफान न बनना।

और बनो कुछ भी लेकिन तुम,
पापी शठ बेइमान न बनना।

अखबारों में छपे दोपहर

अखबारों में छपे दोपहर।
सूरज जैसी तपे दोपहर।

गर्मी का मौसम जब आता,
नाम उसी का जपे दोपहर।

जब सर्दी के दिन आते तो,
कभी कभी ये कंपे दोपहर।

वर्षा ऋतु में घने मेघ से,
कभी अचानक ढंपे दोपहर।

बेमतलब की बातों जैसी,
ऊबन में ही खपे दोपहर।

कभी-कभी तो बूढ़ों जैसी,
चलते-चलते हँफे दोपहर।

सन्नाटों को स्वर दे आती,
जाने कितनी दफे दोपहर।

कितना विशद विराट सिंधु है

कितना विशद विराट सिंधु है।
कालजयी सम्राट सिंधु है।

युगों युगों से जाने किसकी,
रहा जोहता बाट सिंधु है।

बड़ी-बड़ी गर्वित नदियों की,
खड़ी कर खाट सिंधु है।

कैसी भी खाईं हों मन की,
पल में देता पाट सिंधु है।

इसके भीतर जलचर बसते,
अनुपम मौलिक घाट सिंधु है।

सीपी में पलते हैं मोती,
ऐश्वर्य की हाट सिंधु है।

अपने में ही मगन रहे ये,
अलग सभी से ठाट सिंधु है।

मन को भाता मरुथल है

रेत उड़ाता मरुथल है।
मन को भाता मरुथल है।

जीवन की सच्चाई के,
गीत सुनाता मरुथल है।

मानव मानव की पीड़ा-
को दर्शाता मरुथल है।

हर कण प्यासा लगता है,
आस जगाता मरुथल है।

दुखी आत्मा हो जिनकी,
भाग्य विधाता मरुथल है।

प्रीति भरे अनुबंधों की,
रस्म निभाता मरुथल है।

मन 'प्रसून' सा तब खिलता,
सम्मुख आता मरुथल है।

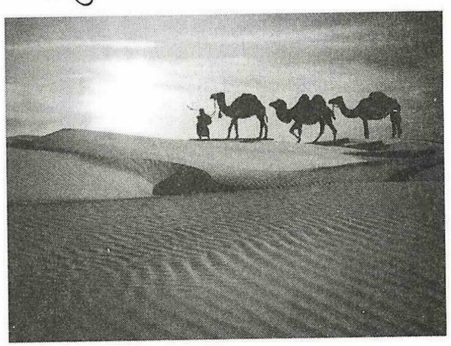

मान सरोवर

कितना पावन मान सरोवर।
लहराता है जैसे अंबर।

नीला नीला शुद्ध नीर है,
पी लो जी भर मौका पाकर।

स्थित है कैलाश शिखर पर,
है भोले का हाथ शीश पर।

दुर्गम स्थल में रमता है,
दर्शन पा लो पाकर अवसर।

राजहंस इसके वासी हैं,
नीर क्षीर का ज्ञान मनोहर।

तुलना इसकी नहीं किसी से,
मौलिकता इसकी है मनहर।

इसे नमन करता 'प्रसून' है,
कीर्ति गा रहा मन से सस्वर।

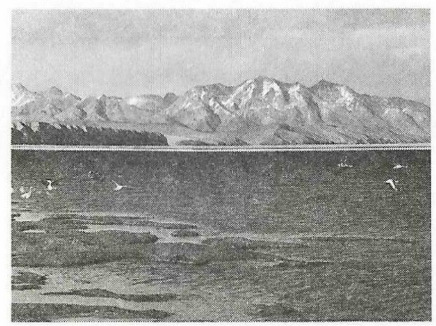

कौन भला पर्वत समान बस

कौन भला पर्वत समान बस।
इससे ऊँचा आसमान बस।

जिसकी है ये पराकाष्ठा,
ऊँचाई में है महान बस।

अमृत तुल्य वन-औषधियों का,
करता है ये सदा दान बस।

घाटी में झरनों को भेजे,
मानो इसको महा प्रान बस।

वनचर कहा मानते जिनकी,
इसके हाथों में कमान बस।

इसकी पीर न जाने कोई,
करता रहता अश्रुपान बस।

अपना दुखड़ा कभी न रोता,
एक तपस्वी बेजुबान बस।

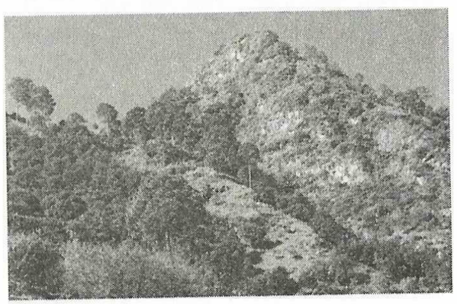

भारत माँ

जिसको सूरज सा तेज मिला,
जो चंदा जैसा शीतल है।
जिसकी आँखों में सपने हैं,
जिसके हाथों में शतदल है।।

यह देश हमारा अपना है,
यह धरा हमारी अपनी है।
जिसके हर कण के ऋणी सभी,
वह भारत माँ सी जननी है।।

जिस दिन थे हम सब मुक्त हुए,
वह दिन पुण्यों के फल-सा है।
साँसों में तभी हिमालय के,
खिलता मधु पुष्प कमल-सा है।।

इसको हम शीश झुकायेंगे,
जीवन सम्मान इसे देंगे।
इसकी खातिर मिट जायेंगे,
अपना मन प्रान इसे देंगे।।

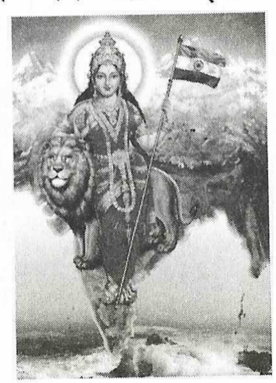

जाड़ा आया

जाड़ा आया जाड़ा आया जाड़ा आया जाड़ा।
किसी शेर की तरह जोर से आकर पास दहाड़ा।।

कोई काम न करते बनता इस सर्दी के मारे,
चुन्नू-मुन्नू खेल न खेलें चुप बैठे बेचारे।
कट कट कट कट दाँत बज रहे जैसे पढ़े पहाड़ा,
किसी शेर की तरह जोर से आकर पास दहाड़ा।।

कोई अँगीठी सुलगाये है कोई लगाये हीटर,
पल-पल जैसे घटता-बढ़ता हो सर्दी का मीटर।
गर्म कोट-स्वेटर सब निकले कसकर उनको झाड़ा,
किसी शेर की तरह जोर से आकर पास दहाड़ा।।

गर्म चाय की चुस्की लेकर इसको दूर भगायें,
ओढ़ रजाई कम्बल बैठें कहो कहाँ अब जायें।
कोहरा इतना तेज कि छाये ज्यों आँखों पर माड़ा,
किसी शेर की तरह जोर से आकर पास दहाड़ा।।

हुआ जुकाम किसी को कसकर किसी को आई खाँसी,
ठंडे ठंडे दिन लगते ज्यों पड़ी गले में फाँसी।
इसने दुखी किया इसका क्या हमने कहो बिगाड़ा,
किसी शेर की तरह जोर से आकर पास दहाड़ा।।

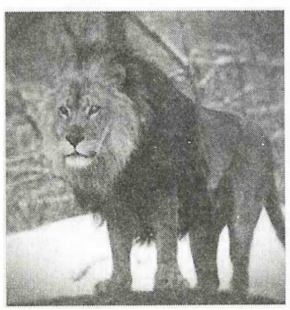

मछलियाँ एक जगह रहतीं

मछलियाँ एक जगह रहतीं,
किसी से कुछ न कभी कहतीं।

कभी तो तेज कभी धीरे,
नदी के भीतर या तीरे।
तैरती रहती हैं जल में,
धार के संग-संग ही बहतीं।।

रहें एक दूजे के संग ही,
रंगी एक दूजे के रंग ही।
बिछड़ना हो न कभी इनका,
आत्मा इनकी दुख सहती।।

सलिल ही इनका जीवन है,
यही इनका घर-आँगन है।
कभी जल से बाहर जो हों,
नीर की चाह लिये दहतीं।।

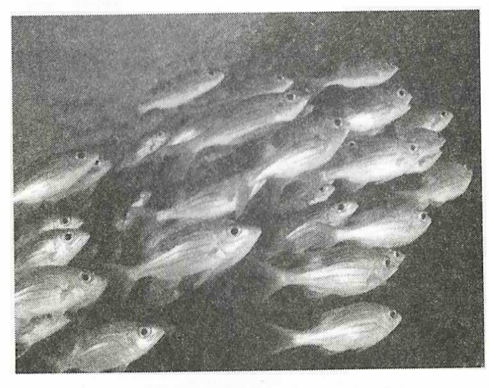

हमारी नानी

कभी ननिहाल निवासी थे,
किसी के हम भी नाती थे।
हमारे भी एक नाना थे,
बड़े गुस्सैल ये माना थे।
हमारी नानी भी थीं एक,
एक रहती थी उनकी टेक।
हमारे लिये था मन में प्यार,
भले ही हम शहराती थे।।

हमारे मामा भी थे पाँच,
नचाते थे हम उनको नाच।
हमारी मौसी भी थीं तीन,
बड़ी चालाक मगर छलहीन।
बहुत ही प्रेम हमें करतीं,
हम उनके दिया औ बाती थे।।

गाँव नाना का सुन्दर था,
खुशी का गाना घर-घर था।
थे सारे लोग बहुत अच्छे,
बड़े सीधे-सादे सच्चे।
सभी के मन हम बसते थे,
कि जैसे उन्हीं की थाती थे।।

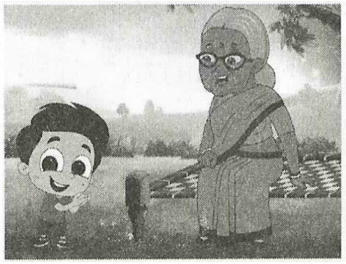

धरा पल्लवित पुष्पित होगी

भारत माँ के बेटे हैं हम,
भरत भूमि पर लेटे हैं हम।

इस धरती के ऋणी रहेंगे, बहती जैसे नदी बहेंगे।
पवन झकोरे लेता जैसे, जीवन मधुमय देता जैसे।
पर्वत जैसे ऊँचे दिखते, दृष्टि कलम से घाटी लिखते।।
दिशा दिशा को नाप-नाप कर,
सबका भार समेटे हैं हम।।

इसी सृष्टि में जन्म लिया है, जीवन भी भरपूर जिया है।
इसके कण-कण में प्रसन्नता, दूर करेंगे हर विपन्नता।
मानवता पर लिखकर कविता, नया उगायेंगे हम सविता।।
पवनों और चक्रवातों को,
बाँहों बीच लपेटे हैं हम।।

पास प्रेम सद्भाव की पूँजी, सत्यं शिवं भावना गूँजी।
मर्यादाओं में डूबे हैं, काफी ऊँचे मंसूबे हैं।
विश्व विजय है लक्ष्य हमारा, भारत माँ ने हमें पुकारा।।
नदियों झीलों की तो छोड़ो,
सागर को भी फेटे हैं हम।।

माटी का सम्मान करेंगे, अम्बर का गुणगान करेंगे।
मन में भर सुख चाह घनेरी, बजा शांति की दो रणभेरी।
तब ही देश महान बनेगा, एक नया वरदान बनेगा।।
धरा पल्लवित-पुष्पित होगी,
अभिशापों को मेटे हैं हम।।

चक्करदार नदी

टेढ़ी चक्करदार नदी है।
मीठे जल की धार नदी है।

हर प्यासे की प्यास बुझाती,
सीधी सरल उदार नदी है।

सुंदर तीर घाट मनहर हैं,
मगर मीन का प्यार नदी है।

नाविक नौका लेकर खेते,
नौका जल पतवार नदी है।

गहरे भँवर सँभल कर तैरो,
कहती सौ-सौ बार नदी है।

इसकी लहर लहर को देखो,
कोमल और सुकुमार नदी है।

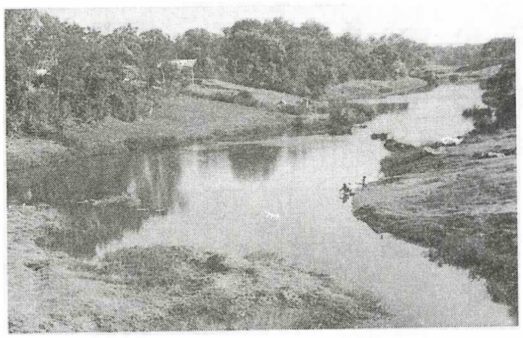

पार्क में बाल गोपाल

पार्क में बाल गोपाल हैं खेलते।
भारती माता के लाल हैं खेलते।

खेलते कुछ कबड्डी हैं उत्साह से,
कुछ लगन भर के फुटबाल हैं खेलते।

ध्यान रखना कोई चोट खाये नहीं,
बच्चे जो ठोंककर ताल हैं खेलते।

अपने ही आप पर मुग्ध होकर सखे,
जो बजाते स्वयं गाल हैं खेलते।

चेतना से भरे सारे बच्चे दिखे,
अपनी खुद की बने ढाल हैं खेलते।

खेलेंगे जो नियम से वही खेल में,
पहनेंगे वे ही जयमाल हैं खेलते।

तितली के पंखों सी भोर

तितली के पंखों सी भोर।
सागर के शंखों सी भोर।

कभी महारानी सी दिखती,
कभी दिखे रंकों सी भोर।

किसकी डूबे किसकी चमके,
दिखे भाग्य अंकों सी भोर।

मानस के मेले में अप्रतिम,
बजती है डंकों सी भोर।

दाँव अनोखे खेल रही है,
बड़े कुशल कंकों सी भोर।

भरे चेतना सारे जग में,
लगती निःशंकों सी भोर।

सभी देखकर अचरज करते,
कमल नीर पंकों सी भोर।

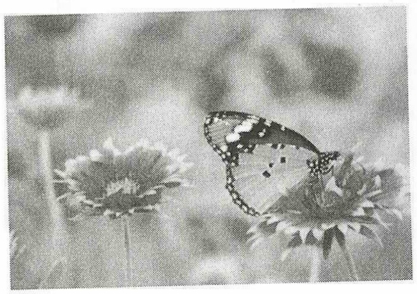

टूटी खोली

है गरीब की टूटी खोली।
उस पर किस्मत फूटी खोली।

माटी की चटकी दीवारें,
घर में एक न खूंटी खोली।

दरवाजे की बात न पूछो,
मच्छर मक्खी च्यूंटी खोली।

अभिशापों के कई घूंट वह,
एक साँस में घूंटी खोली।

शीतल मोहक पवन बहे तो,
लगे कि शिमला ऊटी खोली।

कई बार तो आस-पास के,
लोगों ने ही लूटी खोली।

फिर भी चहल-पहल में डूबी,
पिये कौन सी बूटी खोली।

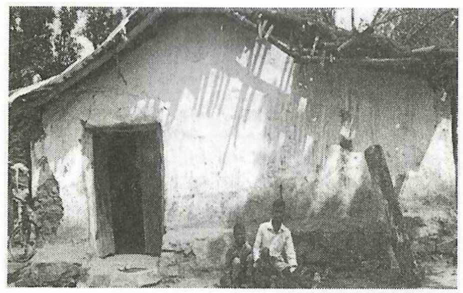

एक टांग पर खड़ा बगूला

होकर बैठे आग बबूला।
टेढ़ी भौंहें मुँह भी फूला।

पिंटू जी की बात अलग है,
झूल रहे गुस्से में झूला।

एक श्वान भागा जाता है,
होकर अंधा लंगड़ा लूला।

एक टांग पर टिका ताल में,
मछली खाने खड़ा बगूला।

पल में सारा खेल खत्म हो,
गरम लौह पर चले बसूला।

वह जैसे हैं वैसे अच्छा,
बात भूलने वाली भूला।

सदा काम तुम अच्छे करना,
कभी न करना ऊलजुलूला।।

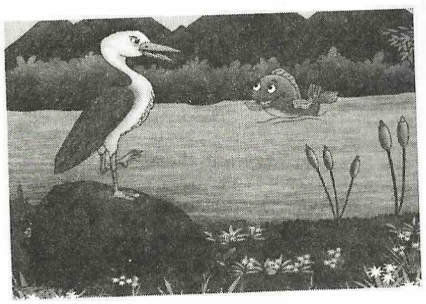

सीप शंख से जुड़ते नाते

सागर जब भी जिद पर आते।
अपना भीषण रूप दिखाते।

इसके सारे तट सुंदर हैं,
हम सब देख देख बलि जाते।

गहराई में मिलते मोती,
सीप शंख से जुड़ते नाते।

जलचर इसके बने निवासी,
इसमें सभी आश्रय पाते।

जल इसका नीला चमकीला,
खारा जिससे नमक बनाते।

बड़े बड़े जलयान तैरते,
जिन्हें देखकर सब भय खाते।

इसे नमन कर लें हम बच्चों,
पूर्ण सृष्टि का मान बढ़ाते।

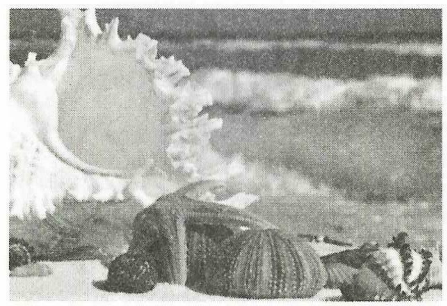

आसमान से बड़े पहाड़

ऊँचे ऊँचे खड़े पहाड़।
आसमान से बड़े पहाड़।

कभी न अपना शीश झुकाते,
अपनी जिद पर अड़े पहाड़।

गलती से भी नहीं ढहेंगे,
शिलालेख से जड़े पहाड़।

लीन प्रार्थना में ईश्वर की,
योगी जैसे पड़े पहाड़।

सबको सुख समृद्धि दे रहे,
अच्छाई को तड़े पहाड़।

आँधी पानी तूफानों से,
हर दिन हर पल लड़े पहाड़।

भले बुरे का भेद समझते,
हो करके दो धड़े पहाड़।

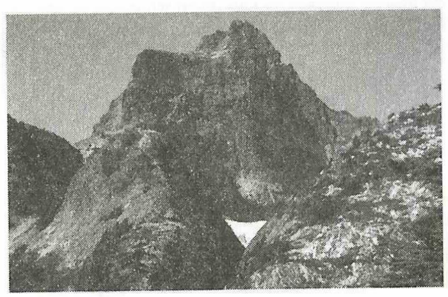

बात बच्चों की निराली

भले ही कहो तुम बड़े ये मवाली।
सदा बात बच्चों की होती निराली।

यही भारती माता के लाल सच्चे,
प्रकृति इनकी हम सबकी है देखी-भाली।

तनिक बात में ये फफक करके रोते,
तनिक बात में ये बजा देते ताली।

सदा हो के रहते ये खुद में मगन हो,
कभी बैठ पाते नहीं ये तो खाली।

घुसे बाग में ये शरारत जो करने,
नहीं खोजने पाते हैं इनको माली।

न हों ये कभी भी दुखी प्रार्थना है,
सदा ही रहे इनके मुखड़ों पे लाली।

हमेशा ही फूले फूलें ये जगत में,
पड़े प्रभु न इन पर नजर कोई काली।

तिरंगा गंगा सा पावन

लगे जन-जन को मनभावन।
तिरंगा गंगा सा पावन।।

हिमालय पर जा लहराये,
भारती माँ गुन गुन गाये।
नयन को गर्वित कर जाये।
हिंद के मानस का दर्पन,
तिरंगा गंगा सा पावन।।

ये सागर सा लहराता है,
ये अंबर छूकर आता है।
तिरंगा गीत सुनाता है।
समर्पित इस पर जीवन धन,
तिरंगा गंगा सा पावन।।

ये ध्वज जग को कुटुंब माने,
ये ध्वज मानवता पहचाने।
ये ध्वज करता जो भी ठाने।
हृदय में गीता रामायन,
तिरंगा गंगा सा पावन।।

बादल जल से भरे

बादल जल से भरे घड़े हैं।
आज बरसने को उमड़े हैं।

अपने पाँवों में बिजली के,
देखो पहने हुए कड़े हैं।

आज बरस कर ही मानेंगे,
अपनी जिद पर बहुत अड़े हैं।

बहने देते नहीं हवा को,
उसका भी आँचल पकड़े हैं।

आज भिगो देंगे धरती को,
लगता कुछ उखड़े उखड़े हैं।

भाग रहे हैं इधर-उधर को,
कामधेनु के ये बछड़े हैं।

इनकी गरज सुनी बच्चों ने,
भीगी बिल्ली बने खड़े हैं।

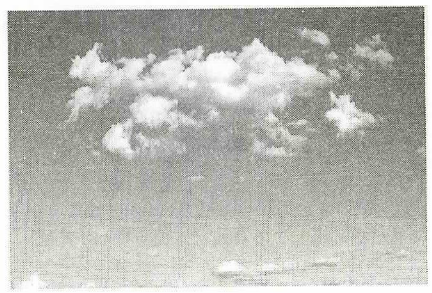

पाठशाला

पाठशाला में छत की जगह टीन है।
इसकी हालत बड़ी यार संगीन है।

पानी बरसे टपाटप तो ऐसा लगे,
खोपड़ी पर बजे तक धिना धीन है।

वर्षा में खेलने निकले ओले पड़े,
चाँद अपनी हुई एक दो तीन है।

भीड़ भी मेढकों की उछलने लगी,
देखकर हर तरफ जल सुखी मीन है।

एक छोटा सा घर प्रभु भिखारी को दो,
सिर छिपाए कहाँ सोच में दीन है।

●●●